Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-1(A)| January - 2026

Original Article

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में उदारवादियों की भूमिका

डॉ.डौली कुमारी
सामाजिक विज्ञान संकाय,इतिहास ल. ना. मिथिला वि.,दरभंगा
Email- Daulikri2020@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2026-180133
ISSN: 2230-9578
Volume 18
Issue 1(A)
Pp. 162-165
January - 2026
Submitted: 18 Dec. 2025
Revised: 28 Dec. 2025
Accepted: 13 Jan. 2026
Published: 31 Jan. 2026

शोध सारांश

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का इतिहास कांग्रेस का ही इतिहास है। कांग्रेस के नेतृत्व में ही भारत में राष्ट्रीय आंदोलन का सूत्रपात हुआ, जिसका उद्येष्य भारत को अंग्रेजी शासन से मुक्त करना नहीं था। वह भारत के षिक्षित तथा अभिजात वर्ग के लोगों की एक संस्था थी। यह सही माने में भारत की प्रतिनिधि सभा नहीं थी। अंग्रेजों के शासन की स्थापना के पूर्व सही अर्थ में भारत में राष्ट्रीय भावना का निर्माण नहीं हो पाया था। उन्नीसवी शताब्दी में भारत में जो धार्मिक सामाजिक बौद्धिक एवं वैज्ञानिक प्रगति हुई उसका प्रभाव राजनीतिक जीवन पर भी पड़ा तथा एक नए भारत का जन्म हुआ। जैसे–जैसे भारत में अंग्रेजों साम्राज्य का विस्तार होता गया वैसे–वैसे अंग्रेजों के विरूद्ध असतोष की भावना भी बढ़ती गई कांग्रेस ने 1885ई. से 1947 ई. तक ब्रिटिष साम्राज्य के विरूद्ध लगातार आंदोलन किया और उसी के प्रयत्नों से भारत को स्वतंत्रता मिली। सन् 1885 ई. अर्थात कॉग्रेस के स्थापना वर्ष से 1947 ई. तक के भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के इतिहास को अध्ययन की सुविधा के लिए तीन चरणों के बॉटा गया था। प्रथम चरणः उदारवादी युग, उग्रवादी युग, गाँधी युग था।

मुख्य शब्द :– *भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन, उदारवादी, युग, उग्रवादी युग, गाँधी युग, क्रातिकारी, ब्रिटिष, साम्राज्य की संघर्ष,*

भूमिका

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का प्रथम चरण :–

उदारवादी युग (1885–1905) कांग्रेस के प्रारंभिक उद्येष्य प्रारंभ में कांग्रेस का उद्येष्य भारत को अंग्रेजों शासन से मुक्त करना नहीं था। यह भारत के षिक्षित तथ अभिजात वर्ग के लोगों की एक संस्था थी यह सही माने में भारत की प्रतिनिध सभा नही थी। इसके सदस्थ नरम राष्ट्रीयता के पोषक थे और विनम्र शब्दों में सरकारी कार्यों की आलोचना कर उनमें सुधार के सुझाव देते थे। स्थापना के कई वर्ष बाद तक कांग्रेस के अधिवेषन नीति की आलोचना कर सुधार के प्रस्ताव पास होते थे। ये प्रस्ताव बड़े विनम्र शब्दों में होते थे और सरकार के प्रति किसी प्रकार के विद्रोह का लक्ष्य नहीं रखते थे। चुँकि सरकार से कॉग्रेस का कोई विरोध नहीं था, इसलिए भारतीय तथा अंग्रेज कर्मचारी भी इसके कार्यो में भाग लेते थे। लार्ड डफरिन तथा मद्रास के गवर्नर के क्रमषः कॉग्रेस के दुसरे और तीसरे अधिवेषन के अवसर पर भाग लेने वाले प्रतिनिधियों को सरकारी भवन में प्रतिभोज दिया था।[1]

(1) उदारवादियों का प्रभाव :–

प्रारंभ में कांग्रेस क्रांतिकारी संगठन नहीं था। उस समय उसकी बागडोर नाम राष्ट्रवादियों के हाथ में थी। नरम राष्ट्रवादियों की अंग्रेजी की न्यायप्रियता में दृढ़ आस्था थी। उनका प्रमुख हटोव या भारतीय शासन का प्रजांतत्तीकरण तथा विधानसभाओं में भारतीय प्रतिनिनिधों की संख्या में वृद्धि । वे ब्रिटिष सम्राट के प्रति राजभक्ति दिखाते थे और राजनीतिक जागरण के लिए अपने को अंरेजों का कृतज्ञ मानते थे कॉग्रेस के बारहवे अधिवेषन में मुहम्मद रहीमतुल्सा ने कहा , "अंग्रेजों से अधिक ईमानदार शक्ति संपन्न जाति सूर्य के नीचे और कोई नहीं है।" चूँकि उदारवाद नेताओं का अंग्रेजों की न्यायप्रियत में अटूट विष्वास था, इसलिए वे वैधानिक आंदोलन द्वारा ही अपनी मॉगों की पूर्ति करने का प्रयास करते थे। वे प्रार्थनापत्तों तथा प्रतिनिधिमंडलों द्वारा ब्रिटिष सरकार से अपनी न्याय–युक्त मॉगों को मानने का आग्रह करते थे।[2] उदारवादी युग में कॉग्रेस द्वारा कई राजनीतिक मॉग पेष की गई थी।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
डॉ.डौली कुमारी, सामाजिक विज्ञान संकाय, इतिहास ल. ना. मिथिला वि.,दरभंगा

How to cite this article:
कुमारी, . डौली . (2026). भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में उदारवादियों की भूमिका. Journal of Research & Development, 18(1(A)), 162–165. https://doi.org/10.5281/zenodo.18618170

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.18618170
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-1(A)| January - 2026

- धारा –सभा का विस्तार हो उसके सदस्य जनता द्वारा निर्वाचित हो।
- केंद्रीय तथा प्रांतीय धारा –सभाओं में भारतीय सदस्यों की संख्या में वृद्धि लाई जाए।
- न्याय–व्यवस्था में जुरी का प्रयोग हो।
- परिषद में तथा उच्च नौकरियों में भारतीयों को स्थान मिले तथा भारतीयों को उच्च सैनिक षिक्षा दी जाए।
- शस्त्र कानून में संषोधन लाया जाए।
- सन् 1905 ई में गोपालकृष्ण गोखले ने बिटिष सामाज्य के अन्तर्गत स्वायत शासन की मांग की।1906 ई में इसी मांग को दादाभाई नौरोजी ने द्वहराया। कांग्रेस ने सामाजिक और आर्थिक जीवन के क्षेत्र में आवष्यक सुधार लाने के लिए कुछ मांगे रखी थी।
- भूमि–कर में कमी की जाए।
- सिंचाई की उचित व्यवस्था हो।
- भारतीय उघोग–धंधों को प्रोत्साहित किया जाए एवं उसका आधुनिकीरण किया जाए।
- भारत से बाहर भेजे जानेवाले अनाज के निर्यात पर प्रतिबंध लगया जाए।
- शासन के व्यय में कमी की जाए।
- नमक–कर की समाप्त किया जाए।

2. सरकार की नीति में परिवर्तन और उसके परिणाम :–

आरंभ में कांग्रेस की स्थापना की ब्रिटिष कृटनीति की महान विजय समझ जाता था। परंतु सरकार और काँग्रेस के बीच यह मधुर संबंध आधिक समय तक कायम नही रह सका। ह्यूम के उधेष्य सच्चे और प्रषंसनीय थे। ह्यूम कांग्रेस द्वारा भारतीयों को सेवा करना चाहता था। परंतु शीध्र ही सरकार इस संगठन से भयभीत हो गई और उसे दुसमें खतरा दिखाई देने लगा। सरकार ने कांग्रेस को ोत्साहन देना छोड़ दिया। 1868 ई. से सरकार की कांग्रेस–संबंधी नीति में परिवर्तन हुआ। लॉर्ड डफरिन ने एक भोज के अवसर पर कहा, "अब काँग्रेस का झुकाव राजद्वोह की और हो गया है और यह खंस्था षिक्षित भारतीयों के नाममात्र का प्रतिनिधित्व करती है। 1990 इ. में सरकार ने एक विज्ञाप्ति निकाली जिसके अनुसर सरकारी अधिकारियों की काँग्रेस के अधिवेषन में शामिल होने की मनाही की गई। मुसलमानों को भी काँग्रेस के कायों से अलग रखने की चेष्टा होने लगी। इस प्रकार सरकार एवं काँग्रेस के आपसी संबधों में कटुता बढ़ने लगी।3 सरकार के इस बदलते हुए रूख के बावजूद कांग्रेस अपने रास्ते पर चलती रही। निःसंदेह कांग्रेस की कार्य नीति में कुछ परिवर्तन आया। कांग्रेस के नेताओं ने वायसराय के विचारों का खंडन करना शुरू किया। धीरे–धीरे काँग्रेस की और से देष के विभिन्न भागों में सभाएँ की जाने लगी और राष्ट्रीय मांगों की पूर्ति के लिए प्रस्ताव पारित होने लगे। किंतु, अब भी कांग्रेस नेताओं का अंग्रेजो में विष्वास था। सुरेंद्रनाथ बनजी ने पूना कांग्रेस में भाषण देते हुए भारतवासियों का अंग्रेजो को ब्रिटिष सरकार के प्रति वफादार बताया। इंगलैड में भी कांग्रेस के कार्यो का प्रचार तेजी से होने लगा, जिससे कुछ अंग्रेजो ने भी दिलचस्पी दिखाई।4 ब्रिटिष पार्लियामेट के सदस्य चार्ल्स ब्रेडला और सर विलियड वेडरवर्न के नाम इस संदर्भ में विषेष उल्लेखनीय है, जिनके प्रयसों के फलस्वरूप 1890 ई. में इंडियन पार्लियामेटरी कमिटी की स्थापना हुई। इस कमिटी ने 1890 ई. में इंडिया नामक एक पत्रिका भी प्रकाषित की, जो 1892 ई. में मासिक और 1896 ई. में साप्ताहिक रूप से प्रकाषित होने लगी। इस प्रयत्यों के परिणामस्वरूप 1892 ई. में इंडियन कौसिल ऐक्ट पास हुआ, जिससे भारतीय विद्यानमंडल में कुछ सुधार हुए यह सुधार–अधिनियम काँग्रेस के प्रयत्नों का ही प्रतिफल था। परंतु, कांग्रेस इससे संतुष्ट नही हुई। यही नहीं, भारतीयों को जो थोडे–बहुत राजनैतिक आधिकार प्राप्त हुए थे उनपर भी कुठाराघात होने लगा। सन् 1898 ई. एक कानून पारित हुआ जिसके अनुसार अंग्रेजो शासन की आलोचना करना अपराध माना गया ।1899 ई. में कलकत्ता काँरपरेषन के भारतीय सदस्यों की संख्या को घटा दिया गया। सन् 1904 ई. प्रेस की स्वतंत्रता सीमित कर दी गई। बालगंगाधर तिलक को तथा अनेक समाचार पत्रों के सम्पादकों को केंद कर लिया गया इससे उदारवादियों में अत्यधिक असंतोष हुआ। सरकार भी कांग्रेस के प्रस्तावों को ठुकराती रही। अतः कांग्रेस के कुछ सदस्यों को विष्वास हो गया कि केवल प्रस्ताव पारित करने से उधेष्य की सिद्धि नहीं होगी, इसके लिए कुछ अधिक ठोस कदम
उठाने होगे।5

3.तिलक का पदार्पण :–

उदारवादियों के समय ही भारतीय राजनीतिक रंगमंच पर बालगंगधर तिलक का पदार्पण हुआ।उनका कहना था कि काँग्रेस की नरमी और राजभक्ति स्वतंत्रता प्राप्त करने में बाधक है। केवल प्रस्ताव प्रास करने तथा अंग्रेजों के सामने हाथ पसारने से राजनीतिक अधिकार प्राप्त नहीं होंगे, बल्कि उनके लिए आंदोलन करना होगा। बलगंगधर तिलक का जन्म महाराष्ट्र में हुआ था, जहाँ दो सौ वर्ष पहले षिवाजी जैसे महान राष्ट्रीय एवं वीरे नेता का जन्म हुआ था। तिलक बहुत बडे विद्वान और सफल पत्रकार थे। संस्कृत मराठी और अंग्रेजों भाषा में वे पारंगत थे। उनका विष्वास था कि जो अपनें पैरों पर नहीं खडा होता उसकी सहायता ईष्वर भी नहीं करते। वे महान देष भक्त थे और उनका द्वढ़ विष्वास था कि ब्रिटिष शासन के अंत के बिना देष का कल्याण संभव नहीं हैं। उन्होंने गणपति समारोह और षिवाजी समारोह का आयोजित कर लोगों की धार्मिक भावना को जगाया तथा उनमें राष्ट्र के प्रति भाक्ति पैदा की। उन्होने विद्यार्थियों के लिए अनुषान तथा शरीरिक स्वास्थ्य पर अधिक जोर दिया :ताकि युवकों में साहस का विकास हो और वे निभैक होकर राष्ट्रीय आंदोलन में भाग ले सके। महाराष्ट्र के युवकों में जोष तथा श्वदेष–प्रेम उत्पन्न करने में तिजक बहुत–कुछ सफल हुए। इसमें उन्हे महाराष्ट्र के आर्थिक संकट से भी सहायता मिली। उस समय महाराष्ट्र अकाल और प्लेग का षिकार था। इससे ब्रिटिष शासन के विरूद्व लोगो में छोर असंतोष फैल रहा था। तितक–जिन्हे अंग्रेजो भारतीय अषांति का जनक कहकर पुकार थे– 1897 ई. में राजद्वोह के अपराध में गिरपतार कर लिए और उन्हे अठारह माह के कारावास की सजा दी गई–किंतु, कुछ कारणों से सजा छह महीनों की कर दी गई। सरकार की इस दमनकारी नीति

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-1(A)| January - 2026

का विपरीत फल हुआ। तिलक की गिरफतारी से भारतवासी क्षुब्छ हो उठे और देष में छोर असंतोष फैल गया। निस्संदेष कुछ समय के लिए राष्ट्रीय प्रगति रूक गई थी और भारत के राजनीतिक गमन में शांति कायम हो गई थी, किंतु यह शांति आनेवाली झंझावात का घोतक थी जो 1905 ई. में फूट पड़ी।[6]

अतः 1905 ई. तक कॉग्रेस पूर्णतः उदारवासियों तथा नरमदलीय नेताओं के प्रभाव में थी, जो अंग्रेजों की न्यायषीलता तथा सच्चाई में विष्वास करते थे। वे शासन में किसी महत्वपूर्ण या मूल भूत परिवर्तन के समर्थक नहीं थे अपितु परिषदों, सरकारी सेवाओं, स्थानीय संस्थाओं और रक्षा सेनाओं के क्रमिक सुधार की मॉग करते रहे। दादाभाई नौरोजी, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ए. ओ. ह्यूम, गोपालकृष्ण गोखले, सर फिरोजशाह मेहता और महादेव गोविंद राणाडे पुमुख उदारवादी नेता थे। गुरूमुख निहाल सिंह के शब्दों में, कांग्रेस द्वारा राज भाक्ति की प्रतिज्ञा ,नरम नीति, आवेदन को नही वरन भिक्षाकृति की नीति अपनाने पर भी ,उसने यह समय राष्ट्रीय जागरण राजनीतिक शिक्षा तथा भारतीयों को एक सूत्र में बाँधने और उनमें सामान्य भारतीय राष्ट्रीयता की भावना के निर्माण में बहुत अधिक सहयोग दिया।'' उदार राष्ट्रीयता का मूल्यांकन सन् 1885 ई. से 1905 ई. तक कांग्रेस उदारवादियोंका गढ़ बनी रही। शूरू में उदार राष्ट्रवादियों ने जो कार्य किए उनमें कई त्रुतियाँ थी।[7]

ब्रिटिष साम्राज्य के प्रति मिथ्या धारण :–उदारवादी नेता यह समझ नहीं सके कि भारत में ब्रिटिश साम्राज्य का वास्ताविक आधार क्या है अथवा उसकी क्या प्रवृति है। शासन और शासित के स्वार्थ परस्पर–विराधी होते है। उदारवादी नेताओं का यह अनुमान गलत था कि अंग्रेजों और भारतीयों के हित परस्पर –विरोधी न होकर एक–दुसरे के साथ जूड़े है। उदारवादी अंग्रेजों की न्यायप्रियता के प्रति आवश्यकता से अधिक आशन्वित थें। एक आधुनिक लेखक का यह कहना है कि उदारवादियों की असफलता का यह कारण था कि उन्हें अंग्रेजों की अपराजेयता पर विश्वास था और वे समझते थे कि अंग्रेजों के उत्पादन की प्रकिृया ही सबसे अच्छी है। वे भूल गए थे कि ब्रिटिश सरकार का मूल उधेश्य भारत का आर्थिक शोषण और राजनीतिक पराधीनता है। जब उनकी छोटी मांगो भी अस्वीकार कर दी गई तो उनका मोह भंग हुआ।[8]

राष्ट्रीय तत्वों का अभाव :–

काग्रेस की स्थापना का आधार शिक्षित भारतीयों का सहयोग था। जनसाधारण के बीच उनकी पैठ नही था। लाला लाजपत राय ने लिखा है," प्रारंभ में कांग्रेस आंदोलन में राष्ट्रीय आंदोलन के तत्वों की कमी थी। आंदोलन न तो जनता द्वारा संयोजित था और न उसके द्वारा अनुप्राजित ही।"

उदारवादियों की सफलताएँ :– उदारवादियों के कार्यक्रम में त्रुटियाँ थी और उन्हे अपने उधेष्य में विषेष सफलता नही मिली। इस कारण लोग उनके महत्व को नजरआंदाज कर देते थे उन्होने खुलकर सरकार का सामना नही किया, क्योंकि वे तत्कालीन पारिस्थिति से विवष थे। यदि वे उग्र नीति अपनाते तो आरंभ से ही सरकार कठोरता से उन्हे दबा देती। ऐसी परिस्थिति में उन्होने जो सेवा भारत के लिए की वह भी न हो पाती । वे भारतीय राष्ट्रीयता के अग्रदूत थे, इसे अस्वीकार नही किया जा सकता। वस्तुतः, कांग्रेस के उदारवादी नेताओं के प्रयास से ही भारत में राष्ट्रीयता की लहर दौड़ी थी। उन्हे के प्रयास से औपनिवेषिक स्वषासन तथा प्रषासनिक युधार की मांगे की जाने लगी थी। भारतीयों को राजनीतिक प्रषिक्षण दिलाने की दिषा में अनका योगदान प्रषंसनीय था। उदारवादियों के प्रयास से ही 1892 ई. का भारतीय परिषंद अधिनियम पारित हो सका था। भारत में प्रतिनिधिमूलक संस्थाओं के विकास में यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण कदम था। उदारवादियों के राजनीति पर प्रभाव से एक लाभ अवष्यक हुआ। राष्ट्रवादियों के ण्ण्ण में आत्मविष्वास तथा आत्मसम्मान की भावना जागृत हुई। वे धीरे–धीरे समझने लगे कि ब्रिटिष शासन उनका कल्याण करना नही चाहती है। उदारवादियों के राजनीति पर प्रभाव से एक लाभ अवष्य हुआ। राष्ट्रवादियों के हृदय में आत्मविष्वास तथा आत्मसम्मान की भावना जागृत हुई। वे धीरे–धीरे समझने लगे कि ब्रिटिष शासन उनका कल्याण करना नही चाहती है।9

भारतीय स्वतंत्रता –संग्राम की नीवं इन्ही बीस वर्षो में उदारवादियों के प्रयास से डाली गई। उदारवादी नेताओं ने ही हमें इस योग्य बनाया कि हम स्वतंत्रता की मांग सरकार के समक्ष रख सके। डॉ. पटभि सीतारमैया ने उदारवादियों के कार्यो की प्रशंसा में यह विचार व्यक्त किया है "प्रारंभिक राष्ट्रवादियों ने ही आधुनिक स्वतंत्रता की इमारत की नींव डाली। उनके प्रयत्नों से ही इस नींब पर एक–एक मंजिल करके इमारत बनती चली गई। पहले उपनिवेशों के ढंग का स्वशासन फिर साम्राज्य के अंतर्गत होम रूल इसके ऊपर स्वराज्य सबसे ऊपर पूर्ण स्वीधीनता की मंजिले बन सकी है"।[10]

उन्नीसवी शताब्दी के अंत तक कांग्रेस पर उदारवादियों का व्याापक प्रभाव रहा था दारवादियों के प्रयत्न से ही 1892 इ. में भारतीय परिषद अधिनियम 1892 पारित हुआ, परतु सरकार की नीति से उदारवादी भी निराश होने लगे थे। बीसवी शताब्दी के आरंभ होते ही भारतीय राष्ट्रीय जीवन में नई भावनाओं का प्रादर्भाव हुआ और भारतीय राष्ट्रीयता ने अपना शैशव छोड़कर तरूणाई में प्रवेश किया। कांग्रेस के तरूण के नेताओं मे उदारवादियों की 'भिक्षा में कुछ ऐसी घटनाएँ घटी जिनके कारण भारत के एक वर्ग में क्रांतिकारी चेतना आई। तरूण वर्ग के अग्रणी नेता लोकमान्य तिलक, विपिन चंद्र, अरबिंद घोष, लाल लाजपत राय आदि थे। इन्होंने नरमदलीय नेताओं की कार्य–प्रणाली को आलोचनात्मक दृष्टि से देखा और उसे स्वीकार नहीं किया। ये लोग उग्रवादी कहलाए। इस प्रकार 1905ई. भारतीय राष्ट्रीय जीवन में उग्रवादियों और क्रांतिकारियों का उदाय हुआ। जवाहर लाल नेहरू ने ठीक ही कहा है राष्ट्रीय आंदोलन हर जगह उदार रूप से प्रारंभ होते है तथा अनिवार्यतः अधिक उग्र हो जाते है स्वतंत्रता की मॉग दबाई जाने पर चक्रवृद्धि ब्याज साहित पूरी करनी पड़ती है।[11]

निष्कर्ष

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का इतिहास कांग्रेस का ही इतिहास है। कांग्रेस के नेतृत्व में ही भारत में राष्ट्रीय आंदोलन का सूत्रपात हुआ जिसका उद्येश्य भारत को विदेशी शासन से मुक्त करना था। यह भारत के शिक्षित तथा आभिजात वर्ग के लोगों की एक संस्था थी। प्रारंभ में कांग्रेस क्रांतिकारी संगठन नही था। उस समय उसकी बागडोर नरम राष्ट्रवादियों के हाथ में थी। नरम

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-1(A)| January - 2026

राष्ट्रवादादियों की अंग्रेजो की न्यायप्रियता में दुत आस्था थी। अंग्रेजो से अधिक ईमानदार और शक्ति संपन्न जाति सर्य के नीचे और कोई नही है। चूँकि उदारवादी नेताओं का अंग्रेजो की न्यायप्रियता में अटूट विश्वास था। इसतिए वे वैद्यानिक आंदोलन द्वारा ही अपने मांगों की पूर्ति करने का प्रयास करते थे। उदारवादी युग में कांग्रेस द्वारा कई राजनीतिक मांगे पेश की गई थी ।कांग्रेस की स्थापना को ब्रिटिश कूटनीति की महान विजय समझा जाता था। उदारवादियों के समय ही भारतीय राजनीतिक रंगमंच पर बालग्रगधर तिलक का पदाप्रण हुआ। उनका कहना था कि कांग्रेस की नरमी और रानभक्ति स्वतंत्रता प्राप्त करने में बधक है।

संदर्भ सूची

1. दत्त, के. के. :– बिहार में स्वातंत्रता आंदोलन का इतिहास खण्ड– 3 पृ. 33
2. सलोना, श्यामः– बिहार समग्र, केबीसी नैनो पब्किेशन प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली, 1889 पृ. 96
3. कुमार, अमरेन्द्र :– स्वाधीनता संग्राम में बिहार की महिलाएँ, हिन्दुस्तान , दिनांक, 15,81,1997 पृ. 17
4. वर्णवाला, महेश कुमार :– भारती डॉ. श्याम भूति बिहार एक समग्र अध्ययन, कॉसमॉस पब्लिकेशन, दिल्ली, 2019
5. दत्त, रजनीपाम :– आज का भारत ,मैकमिल प्रकाशन इण्डियन प्रेस दिल्ली, 1991 पृ. 110
6. दत्त आर. सी. :– इकॉनामिक हिस्ट्र ऑफ इंडिया भारत सरकार ,प्रकाशन विभाग द्वारा पुनमुद्ित, 1960 पृ. 48
7. गाँधी ,एम. के. :– एन आटों बायोग्राफी ऑन द स्टोरी ऑफ एकसपेरीमण्ड विष टुथ, नवजीव पब्लिशिंग हाउस, अध्मदाबाद, 1966 पृ. 102
8. मिश्र, सुनील :– समाजवादी आंदोलन के दस्तावेज, नई दिल्ली , 1977 पृ. 101
9. कुमार, अजय :– बिहार में स्वतंत्रता संग्राम पुरूष और महिला दृष्टि, पटना, 2002 पृ. 60–65
10. वर्मा, सुरेश :– भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का सामाजिक और सांस्कृतिक पक्ष , नई दिल्ली ,2001 पृ. 125
11. वही पृष्ट 125